Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries
and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

13. D. 36. Hindi Caran 1

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.

Presented

by

Munshi Newul Kishore.

Jñānasvarodaya.

Gayan Sarodah

ज्ञानस्वरोदय

گیان سرودیہ

श्रीपरमस्वरशास्त्र पारङ्गत कविकुलभूषण
दूसरवंशीय चरणदासकृत

जिसमें

सरल प्रकार से इड़ा पिङ्गला सुखमना स्वर
भेदों से योगरीति प्रश्नभेद इत्यादि
वर्णित हैं

स्वरशास्त्र के जानने वालों की
सुगमता के लिये

दूसरीबार
स्थान लखनऊ
मुन्शीनवलकिशोर के छापेखाने में छापीगई
अप्रेल सन् १८८२ ई०

श्रीगणेशायनमः

अथ ज्ञानस्वरोदय

श्रीचरणदासकृत

लिख्यते

दोहा

नमो नमो गुरुदेव जी करूं प्रणाम अनंत। तुम प्रसाद सुरभेद
कूं चरण दास वरनंत ॥१॥ पुरुषोत्तम परमात्मा पूरण बि-
स्वाबीस॥ आदिपुरुष अविचल तुहीतोहिनवाऊं शीश॥
२॥ कुंडलिया॥ क्षरओं सूं कहत हैं अक्षर सोहं जान। निह अक्ष
र स्वासारहित ताही कूं मन आन॥ ताही कूं मन आन रातिदिन
सुरत लगावो। आपा आप बिचार और ना शीश नवावो॥ चर-
णदास मत कहत हैं अगम निगम की सीख। यही वचन ब्रह्म-
ज्ञान कौ मानौं बिस्वाबीस॥ ३॥ ओं सूं काया भई सोहं सो मन होय
निह अक्षर सूं स्वासा भई चरणदास भल जोय॥ चरणदासभ
ल जोय खैंच मन वा तहं राखो। क्षर अक्षर निह अक्षर एकै दुब-
धा नाखो॥ जब दरशै एकही एक भेव यह सबै तिहारो। डाल
पात फल फूल मूलसो सभी निहारो॥४॥ कुंडलिया॥ स्वासा सो सो
हं भयो सोहं सो ओंकार। ओं सूं र्रां भयो साधौ करौ बिचार साधौ करौ बि
चार उलट अपने घर आवो॥ घट२ ब्रह्म अनूप सिमट करि तहां स-

भावो ॥ चारबेदका भेदहै गीताकाहै जीव । चरणादास लखिद
आपकूं तोमैं तेरापीव ॥ ५ ॥ दोहा ॥ सबयोगन कोयोगहै सब
ज्ञानन को ज्ञान । सबै सिद्ध कोसिद्धि है तत्वसुरनकोध्यान ॥ ६
ब्रह्मज्ञान कोजापहै अजपा सोहंसाध । परमहंस कोइ जानिहैं
ताकोमतौ अगाध ॥ ७ ॥ भेदस्वरोदय सालहै समुझै स्वासउस्वा
स । बुरीभलीतामें लखै पवन सुरतमनगास ॥ ८ ॥ सुखदेव गु-
रू किरपाकरी दियोस्वरोदयज्ञान । सबसूं अहजानीपरी लाभ
होयकै हान ॥ ९ ॥ इड़ापिंगलासुखमना नाड़ी तीन बिचार । द-
हने बांयें सुरचलै लखै बार नाभार ॥ १० ॥ पिंगल दहिने अंग
है इड़ा सु बांयें होय । सुखमनइन के बीचहै जब स्वर चालैं दोय
॥ ११ ॥ जबस्वर चालैं पिंगला तहँमध्यसूरजबास । इड़ा सु बाँयें
अंगहै चंद करत परगास ॥ १२ ॥ उदय अस्त तिनकी लखै निरग-
म सुरगम बिद्ध । अरुपावै तत्व चरणा कूं जब वह होवै सिद्ध ॥ १३ ॥
सुखदेव कहा चरणादाससूं थिर चरस्वर पहिचान । थिर कारज
कूं चंद्रमा चर कूं भान सुजान ॥ १४ ॥ कृस्नपक्ष जबहीं लगै जाय
मिलाहै भान । शुक्लपक्ष है चंद्रकी यह निहचै कर जान ॥ १५ ॥ मं-
गल अरु इतवार दिन और शनीचर लीन । शुभ कारज कूं मिलत
है सूरजके दिनतीन ॥ १६ ॥ सोम वार शुक्कर भलो दिन बृहस्पति कूं
देख । चंद्र योगमें सुफलहैं कहै चरणा दास सब शेष ॥ १७ ॥ ति-
थिऔ बार बिचारकर दहनों बाँयों अंग । चरणादास कहै सुरजो
मिलै शुभ कारज परसंग ॥ कृष्णपक्ष के आदिही तीन तिथ्य ल-
गभान । फिर चंदा फिरभानहै फिर चंदा फिरभान ॥ १८ ॥ शुक्ल
पक्षके आदिही तीन तिथ्य लग चंद । फिर सूरज फिर चंदहै ।
फिर सूरज फिरचंद ॥ २० ॥ सूरज कीतिथिमें चलैज्यों सूरजपर-
गास । सुखदेही कूं करतहै लाहा लाह हुलास ॥ २१ ॥ शुक्लपक्ष

चंदा चलै पड़वा लेहु निहार ॥ फल आनंद मंगल करै देही कूं सुखसार ॥२२॥ शुक्लपक्ष तिथि में चलै जो पड़वा कूं भान । होय क्लेश पीड़ा कछू कै दुख कै कछु हान ॥२३॥ सूरज की तिथि में चलै जो पड़वा कूं चंद । कलह करै पीड़ा करै हान ताप कै द्वंद ॥२४॥ ऊपर बायें साम्हने स्वर बाँयें के संग । जो पूछै शशि योग में तीनों को परसंग ॥२५॥ नीचे पीछे दाहिने स्वर सूरज को राज । जो कोइ पूछै आय कर तौ मन को शुभ काज ॥२६॥ दहनों स्वर जब चलत है पूछै बाँयें अंग । शुक्ल पक्ष नहिं बार है तौ निरफल परसंग ॥२७॥ जो कोइ पूछै आय कर बैठ दाहिनी ओर । चंद चलै सूरज नहीं नहीं काज बिधि कोर ॥२८॥ जो सूरज में स्वर चलै कहै दाहिने आय । लगन बार अरु तिथि मिलै कछु कारज होय जाय ॥२९॥ जो चंदा में स्वर चलै बाँयें पूछै काज । तिथि औ अक्षर बार मिल शुभ कारज को साज ॥३०॥ सात पांच नौ तीन गिन पंद्रह और पचीस । काज बचन अक्षर गिनै भान योग कूं ईस ॥३१॥ चार आठ द्वादश गिनै चौदह सोलह मीत । चंद योग के संग है चरणादास रणाजीत ॥३२॥ कर्क मेष तुला मकर चारों चर तीं राश । सूरज संग चारों मिलत चर कारज परकाश ॥३३॥ मीन मिथुन कन्या कही चौथी औ धन मीत । द्विस्वभाव कूं सुख मना मुरली सुत रणाजीत ॥३४॥ वृश्चिक सिंह वृष कुम्भ युत बाँयें स्वर के संग । चंद योग कूं मिलत है थिर कारज परसंग ॥३५॥ चित अपनो स्थिर करै नासा आगे नैन । स्वासा देखै दृष्टि सूं जब पावै स्वर चैन ॥३६॥ पांच घड़ी पांचों चलैं फिर वा वारहि बार । पांच तत्व चालैं मिलै स्वर बिच लेहु निहार ॥३७॥ धरती और अकाश है और तीसरी पौन । पानी पावक पांच ये करत स्वास में गौन ॥३८॥ धरती तो सौंहीं चलै औ पीरो रंग देख । बारह अंगुल स्वास में सुरत निरत कर पेख ॥३९॥ ऊपर कूं पावक चलै लाल बरण है भेष । चार सु-

अंगुल स्वास में चररागवास औरेय ।। ४० ।। नीचे कूं पानी चलै पूवे तरं-
गहै तास । सोलह अंगुल स्वासमें चररादास कहै भाख ।। ४१ ।। हरो
रंगहै वायु को तिरछा चालै सोय । आठ सु अंगुल स्वासमें रराजीत-
मीत कारजोय ।। ४२ ।। स्वर दोनों पूररा चलै बाहर ना परकाश । श्या-
मरंगहै तासकी सोई तत्व अकाश ।। ४३ ।। जल पिरथी के योगमें जो
कोइ पूछै बात । शशि घरमें जो स्वर चलै कछु कारज होय जात ।। ४ ।।
पावक और अकाश पुनि वायु कभी जो होय । जो कोइ पूछै आय क-
र सुभ कारज नहिं होय ४५ जल पृथ्वी थिर काजकं चर कारज कूं नाहिं ।
अगिन वायु चर काजकूं दहिने स्वर के माहिं ।। ४६ ।। रोगी को पूंछै को-
ऊ बैठ चंद की ओर । धरती बांयें स्वर चलै मरै नहीं बिधि कोर ।। ४७ ।।
रोगी को परसंग जो बाँयें पूंछै आन । चंद बंध सूरज चलै जीवै ना वह
जान ।। ४८ ।। बहते स्वर सूं आय करि सुनै और जो जाय । जो पूछै ।
परसंग वह रोगी ना ठहराय ।। ४९ ।। सुनै और सूं आय करि पूछै ।
बहते स्वास । वह निश्चय करि जानियो रोगी को नहिं नाश ।। ५० ।।
सुन और सूं आय करि पूछै बहते पक्ष जेते कारज जगत के सु-
फल होयं या सक्ष ।। ५१ ।। बहते स्वर पै आय करि जो पूछै सुन ओर ।
जेते कारज जगत के उलटे होहिं बिधि कोर ।। ५२ ।। कै बायां कै दाहि-
नों जो कोइ पूररा होय । पूछै पूररा ओर ही कारज पूररा सोय ।। ५३ ।।
वर्ष एक को फल कहूं तत्व मन जानै सोय । काल समय सोई लखै बु-
रो भलो जग होय ।। ५४ ।। चौपाई ।। शंक्रान्ति पुनि मेष बिचारै । ता-
दिन लगै सु घड़ी निहारै ।। तब हां स्वर में करै बिचार । चलै कौन सो
तत्व निहार ।। जो बाँयें स्वर पिरथी होई । नीको तत्व कहावै सोई ।। दे-
श ट्टद्ध अरु समय बतावै । परजा सुखी मेह बर्षावै ।। चारा बहुत ढो-
रकूं उपजै । नरदेही कूं अन बहु निपजै ।। जल चालै बांयें स्वर माहीं ।
धरती फलै मेह बर्षाहीं ।। आनंद मंगल सूं जग रहै । आपतत्व दं र

बहै ॥ जलधरती दोनों शुभभाई। चरणदास सुखदेव बताई॥ ५४
तीनि तत्व का कहूं विचारा। स्वर में जाका भेद निहारा॥ लगै मेष सं-
क्रायत तबहीं। लगती घड़ी बिचारै जबहीं॥ अग्नि तत्व स्वर में ज-
ब चालै। रोग दोष सें परजा हालै॥ काल पड़ै थोड़ा सा बरसै। देश
भंग जो पावक दरसै॥ बात तत्व चालै स्वर संगा। जग भय मान होय कु
छु दंगा॥ अर्ध काल थोड़ा सा बरषै। बाय तत्व जो स्वर में दरशै॥ त-
त्व अकाश स्वर चालै सोई। मेह न बर्षै अन्न न होई॥ काल पड़ै त्रण
उपजै नाहीं। तत्व अकाश जो होय स्वर माहीं॥ ५६॥ दोहा॥ चैत महीना
मध्य में जबहीं पड़वा होय। शुक्लपक्ष ता दिन लगै प्रात समय जो हो-
य॥ ५७॥ भोर ही पड़वा कूं लखै पिरथी होय सुजान। होय भमौ परजा
सुखी राजा सुखी निदान॥ ५८॥ नीर चलै जो चंद में यही समय की जी-
त। मेह बर्षै परजा सुखी सम्वत भी को मीत॥ ५९॥ पृथ्वी पानी स-
मौ जो बहै चंद स्थान। दहिने स्वर में जो बहै समौ सु मध्यम जान ६०॥
भोर हि जो सुखमन चलै राज होय उतपात। देखन वालो विनशि है औ-
र काल पर जात ॥ ६१॥ राज होय उतपात पुनि पड़ै काल बिसवास।
मेह नहीं परजा दुखी जो होय तत्व आकाश॥ ६२॥ स्वास में पावक च-
लै पड़ै काल जब जान। रोग होय परजा दुखी घटै राज्य का मान ६३॥
भय कलेश होइ देश में विग्रह फैलै मत्त। पड़ै काल परजा दुखी च-
लै बायु का तत्त॥ ६४॥ संक्रायत और चैत को दोनों भेद लखाय। जगत
काज अब कहत हूं चंद सूर को न्याय॥ ६५॥ चौपाई॥ विवाह दान ती-
र्थ जो करैं। बस्तर भूषण घर पग धरैं॥ बांयें स्वर में ये सब कीजै। पो-
थी पुस्तक जो लिख लीजै॥ योग अभ्यास अरु कीजै प्रीत। औषधि
बाड़ी कीजै मीत॥ दीक्षा मंतर बोवै नाज। चंद योग थिर बैठे राज॥ चं-
द योग में स्थिर जानों। थिर कारज सबही पहिचानों। करै हवेली छ-
पर छावै। बाग बगीचा गुफा बनावै॥ हाकिम जाय कोट में बरै। चंद

योगआसनपगधरै ॥ चरणदास सुखदेव बतावै। चंदयोगथिरका-
जकहावै ॥ ॥ ६६ ॥ दोहा ॥ बाँयेंस्वर के काजये सो मैं दिये बताय।
दहिने स्वरके कहतहूं ज्ञानस्वरोदयगाय ॥ ६७ ॥ चौपाई ॥ जो
खाँड़ौ करलीयो चाहै। जाकर बैरी ऊपरवाहै ॥ युद्ध बाद रणजीते
सोई। दहिनेस्वरमें चालै कोई ॥ भोजन करै करैअस्नान। मैथुन
कर्म भानुपरधान ॥ बही लिखै कीजै ब्योहारा। गज घोड़ा वाहन
हथियारा ॥ विद्यापढ़ै नईजोसाधै। मंतरसिद्धि ध्यान आराधै ॥
बैरीभवनगवनजो कीजै। अरु काहूकूं ऋणजोदीजै ॥ ऋणा
काहूपै तूजोमांगै। विष औ भूतउतारन लागै ॥ चरणदास सुख-
देवविचारी। ये चरकर्मभानकीनारी ॥ ६८ ॥ दोहा ॥ चरकारज
कूं भानहै थिरकारजकूं चंद। सुखमन चलत न चालिये तहांहोय
कछुदंद ॥ ६९ ॥ गांवपरगने खेतपुनि इधर उधरमें मीत। सुखम-
न चलत न चालिये बरजतहैं रणजीत ॥ ७० ॥ रिवन बाँयें रिवन दाहि-
ने सोई सुखमन जानि। ढील लगै कै ना मिलै कै कारज कीहानि ॥
७१ ॥ होय क्लेशपीड़ा कछू जो कोई कहिंजाय। सुखमन चलत नचा-
लिये दीनों तोहि बताय ॥ ७२ ॥ योग करो सुखमन चलै कै आतम
का ध्यान। और काज कोई करै तो कछु आवैहान ॥ ७३ पूरब उत्तर मत
चलौ बांयेंस्वरपरकाश। हानिहोय बहुरै नहीं आवनकी नाहिं आ-
श ॥ ७४ ॥ दहिने चलत न चालिये दक्षिण पश्चिम जानि। जोरेना-
य बहुरै नहीं औ होवै कछु हानि ॥ ७५ ॥ दहिने स्वरमें जाइये पूरबउ-
त्तरराज। सुखसंम्पति आनंद करै सभी होय शुभ काज ॥ ७६ ॥ बांयें
स्वरमें जाइये दक्षिणपश्चिमदेश। सुख आनंद मंगल करै जोरे
जाय परदेश ॥ ७७ ॥ दहिने सेती आय कर बाँयें पूछै कोय। जो बाँ-
यें स्वर बंदहै सुफल काज नहिं होय ॥ ७८ ॥ बाँयें सेती आय कर द-
हिने पूछै धाय। जो दहिनोस्वर बंदहै कारज अफल बताय ॥ ७९ ॥

जबस्वरभीतरकूं चलै कारज पूछै कोय। पैज बांधवा सूं कहो मन-
सा पूरा होय॥८०॥ जबस्वर बाहरकूं चलै तबकोइ पूछै तोर। वा-
को ऐसे भाषिये नहिंकारजविधिकोर॥८१॥ बाँयी करवट सोइये
जल बाँयें स्वरपीव। दहिनेस्वरभोजनकरै तौसुख पावै जीव॥८२॥
बाँयंस्वरभोजनकरै दहिनेपीवैनीर। दशादिन भूलौयोंकरै पावै।
रोगशरीर॥८३॥ दहिनेस्वर झाड़ेफिरै बाँयें लघुसंकाय।युगल
ऐसेसाधिये दीनोंभेदबताय॥८४॥ चंद चलावै द्योसकूं रातचला-
वैसूर। नितसाधन ऐसेकरै होयउमर भरपूर॥८५॥ जितनोंहीं बाँ-
योंचलै सोई दहिनोहोय। दशस्वासा सुखमनचलै ताहिविचारो
लोय॥८६॥ आठपहरदहनोंचलैबदलै नहींजुपौन।तीनबरस।
कायारहैजीवकरैफिरगौन॥८७॥ सोलहपहर चलै जभी स्वासपिंग-
ला माहिं। युगल वर्षकायारहै पीछे रहती नाहिं॥८८॥ तीनरातअ-
रुतीनदिन चलै दाहिनोंस्वास। सम्बत भरकायारहै पीछेफिरहोय
नाश॥८९॥ सोलह दिन निशदिन चलैस्वास भानकी ओर। आयु
जान इक मासकी जीव जाइतन छोर॥९०॥ नौभृकुटीसप्तै श्रवण।
पांच तारका जान। नाक जिह्वा एक सोंकालभेद पहचान॥९१॥
भेद गुरूसों पाइये गुरु बिन लहहि न ज्ञान। चरणदास योंकहतहैं
गुरूपर वारूं प्रान॥९२॥ एक मास जोरैनदिन भानदाहनोहोय।
चरणदास यों कहतहैं नरजीवै दिनदोय॥९३॥ नाड़ीजोसुख-
मन चलै पांच घड़ी ठहराय। पांच घड़ी सुखमनबहै तबहीं नरमर-
जाय॥९४॥ नहीं चंद नहिं सूरहै नहीं सुखमना बाल। मुखसेतीस्वा-
सा चलै घड़ी चार में काल॥९५॥ चार दिनाकै आठ दिन बारह कै
दिन बीश। ऐसे जब चंदा चलै आव जान बड़ईश॥९६॥ तीनरात।
औ तीनदिन चालैतत्व अकाश। एकवर्षकायारहै फेरकालबिस
बास॥९७॥ दिनकूं तौ चंदा चलै चलै रातकूं सूर। यह निश्चय करि

जानियेधारागवनबहुदूर॥९८॥रातचलैस्वरचंदमेंदिनकूंसूर-
जबाल। एकमहीनायोंचलै छठेमहीनाकाल॥९९॥जबसाधूरे-
सीलखै छठेमहीनाकाल। आगेहीसाधनकरैबैठगुफाततकाल॥
१००॥ऊपरखैंचअपानकूंधाराअपानमिलाय। उन्नमकरैसमा-
धिकूंताकूंकालनखाय॥१०१॥पवनपियेज्वालापचैनाभितलै
कराह। मेरडंडकूंफोरकैबसैअमरपुरजाय॥१०२॥जहांकाल
पहुंचैनहींयमकीहोयनत्रास। गगनमंडल कूंजायकरकरै उ-
नमनीबास॥१०३॥जहांकालनहिंज्वालहै छुटैसकलसंताप।होय
उनमनीलीनमन बिसरैआपा आप॥१०४॥तीनोंबंधलगायकै।
याबांयेंकूंसाध।सुखमनयोगहोयचलैदेखैखेलअगाध॥१०५॥
शक्तिजायशिवसूंमिलैजहांहोयमनलीन। महाखेचरीजोलगैजा-
नैजानप्रबीन॥१०६॥आसनपदमलगायकरमूलबंधकूंबांध।मे-
रडंडसीधोकरैसुरनगगनकूंसाध॥१०७॥चंदसूर्य दोउसमकरैठो-
ढ़ीहियेलगाय। षटचक्करकूंबेधकरशून्यशिखरकूंजाय॥१०८॥
इड़ापिंगलासाधकर सुखमनमें करबास। परमज्योतिझिलमि-
लतहांपूजैमन बिधूवास॥१०९॥जिनसाधनआगेकरीतासूंसब
कुछहोय।जबचाहैजबहींततकालबचावैसोय॥११०॥तरुनअ-
वस्थायोगकरबैठरहै मनजीत।कालबचावैसाधवह अंत समय
सराजीत॥१११॥सदांआपमेंलीनरहुकर२जोअभ्यास। आवतदेखै
कालजब गगन मंडल करबास॥११२॥सनईसनईसाधकररा-
खैधाराबढ़ाय। पूरोयोगीजानियेताकूंकालनखाय॥११३॥प-
हिलेसाधननाकियोगगनमंडलकोजान। आवतजानैकालजब
कहाकरैअज्ञान॥११४॥योगध्यानकीनोंनहींज्वानअवस्था।
मीत। आगमदेखैकालकोकहासकै वहजीत॥११५॥कालजीत
हरिसोंमिलैशून्यमहलअस्थान। आगेजिनसाधनकरीतरुनअ-

वस्थाजान ॥११६॥ कालअवधबीतेजभीजबैबीतसबजाय। योगी
धारा उतारिये लेहसमाधजगाय ॥११७॥ कालजीतजगमेंरहे मौत
न ब्यापै ताहि। दशोद्वारकूं फोर कर जब चाहै तब जाय॥११८॥ सूर-
ज मराडल भेदकै योगी त्यागे प्रान। सायुज्यमुक्ति सोई लहे पावै पद।
निर्बान॥११९॥ कृष्णापक्ष के मध्य में दक्षिणाहोय जु भान। योगी
बपु नहिं छांड़ि हैं राजाहोय फिर आन॥१२०॥ राज पायहरिभक्ति क-
र भूर बली पहचान। योगयुगति पावै बहुरि दूसर मुक्ति निदान॥
१२१॥ उत्तरायन सूरज लखै शुक्लपक्ष के माहिं। योगी काया त्यागि-
ये यामें संशय नाहिं॥१२२॥ मुक्तहोय बहुरै नहीं जीव खोज मिटि।
जाय। बूंद समुंदर मिलरहै दुनियां ना ठहराय॥१२३॥ दक्षनायन।
सूरज रहै रहे मास खट जान। फिर उत्तरायन जाय कर रहे मास खट।
मान॥१२४॥ दोनोंस्वरकूं शुद्ध कर स्वासा में सन राख। भेद स्वरोदय
पाय कर तब काहू सूं भाख॥१२५॥ जोरणा ऊपर जाइये दाहिने स्वर
परकाश। जीतहोय हारै नहीं करै शत्रु को नाश॥१२६॥ दुरजन कूं
स्वर दाहनों तेरो दहिनों होय। जो कोई पहिले चढ़ै खेत जीतिहै सोय
॥१२७॥ सुखमन चलत न चालिये युद्ध करन सुनमीत। शीश क-
टावै कै फंसै दुरजन होई जीत॥१२८॥ जो बांयें पिरथी चलै चढ़ आ-
वे कोइ भूप। आप बैठ दंड पेलिये बात कहत हूं भूप॥१२९॥ जल।
पिरथी स्वर में चलै सुनौं कान दे बीर। सुफल काज दोनों करै कै धर-
ती कै मीर॥१३०॥ पावक और अकाश तत बायु तत्व जो होहि। काहू
काज नहिं कीजिये इन में बरजूं तोहि॥१३१॥ दहिनों स्वर जब चलत
है कहीं जाय जो कोय। तीन पांव आगे धरै सूरज को दिन होय॥१३२॥
बांयें स्वर में जाइये बाँयें पर धर चार। बांयें डग पहिले धरै होय चंद को
बार॥१३३॥ दहिने स्वर सें जाइये दहिनी डग भर तीन। बाँयें स्वर सें
चार डग बाँईं कर धर बीन॥१३४॥ गर्भवती के गर्भ की जो कोइ पूछे

आय। बालक होयकै बालकी जीवै कै मरजाय॥१३५॥ प्रश्न्या बा-
लक होनकी जो कोइ पूछै तोय। बांयें कहिये छोकरी दहने बेटा होय
॥१३६॥ दहिने स्वरके चलतही जो वह पूछै आय। वाको बाँयों स्वर।
चलै बालक होय मर जाय॥१३७॥ दहने स्वरके चलतही जो वह पूछै
बैन। वाहूको दहिनो चलै लड़का होय सुख चैन॥१३८॥ बाँयें स्वर के
चलतही आय कहै जो कोय। बेटी होय जीवै नहीं वाको दहिनों होय॥
१३९॥ बाँयें स्वरके चलतही जो वह पूछै बात। वाहूको बाँयों चलै बेटी।
होय कुशलात॥१४०॥ तत्व आकाश के चलतही प्रश्न गर्भकी आय
होय नपुंसक हीजड़ा कै सतवाँसों जाय॥१४१॥ लेन परीक्षा गर्भ की।
जो कोइ पूछै आय। अच्छ होय जो ता समय ओछा ही गिर जाय॥१४२॥
रिवन बाँयें रिवन दाहने दो स्वर सुखमन होय। पूछन वालेसों कहौ
बालक उपजै दोय॥१४३॥ वायु तत्वके चलतही जो कोइ पूछै आ-
य। छाया होय बाढ़ै नही पेट माहिं बिलगाय॥१४४॥ जो कोइ पूछै
आय कर वाकूं गर्भकि नाहिं। दहनों बाँयों स्वर चलै सांध सांसके मा-
हिं॥१४५॥ वंध और जो आयकरिकै पूछै जो कोइ। वंध और गर्भ है वह
ते स्वर नहिं होय॥१४५॥ इड़ा पिंगला सुखमना नाड़ी कहिये तीन।
सूरज चंद बिचारि कै रहै स्वास लौ लीन॥१४७॥ जैसे कछुआ सिमट
कर आपी माहिं समाय। तैसे ज्ञानी स्वाससें रहै सुरत लौ लाय१४८॥
स्वास बनावै कोड़की आव जान नर लोय। बीत जाय स्वासा सबै तब-
हिं मृतक नर होय॥१४९॥ इक्कीस हजार छसै चलै रात दिना जो।
स्वास। बीसासौ जीवै बरष होय अग्निको नास॥१५०॥ अकाल मृत्यु
कोई मरै होय कर भुगतै भूत। स्वास जहां बीतै सभी जब आवै यमदूत॥
१५१॥ चारों संध्यम साधकर स्वासा युगत चलाव। अकाल मृत्यु आ-
वै नहीं जीवै पूरी आव॥१५२॥ सूक्षम भोजन कीजिये रहिये ना पड़ सो-
य। जल थोरो सो पीजिये बहुत बोल मत खोय॥१५३॥ कुंडलिया

मोक्ष मुक्त तुम चहत हो तजो कामना काम। मन इच्छा की मेट कर।
भजो निरंजन नाम॥ भजो निरंजन नाम देह अभ्यास मिटावै। पंचन
के तज स्वाद आपसैं आप समावै॥ जब छूटै झूंठी देह जैसे के तैसे र-
हिया। चरणदास यही मुक्त गुरू ने हमसों कहिया॥१५४॥ दो-
हा॥ देह मरै तू है अमर पारब्रह्म है सोय। अज्ञानी भटकत फिरत ल-
खै सो ज्ञानी होय॥१५५॥ देह नहीं तू ब्रह्म है अविनाशी निर्बान।
नित न्यारो तू देह सूं करम देह सब जान॥१५६॥ डोलन बोलन सो-
वना भक्षण कर आहार। सुख दुख मैथुन रोग सब गरमी शीत नि-
हार॥१५७॥ जात बरण कुल देह की सूरत मूरत नाव। उपजै बिन-
शै देह सों पांच तत्व को गांव॥१५८॥ पावक पानी वायु है धरती और
अकाश। पांच तत्व के कोठ में आय कियो तैं बास॥१५९॥ पांच प-
चीसौ देह संग गुण तीनों हैं साथ। घट उपाधि सों जानिये करत र-
हत उतपात॥१६०॥ जिह्वा इंद्री नीर की नभ की इंद्री कान। नासा इं-
द्री धरन की कै विचार पहिचान॥१६१॥ त्वचा सो इंद्री बायु की पा-
वक इंद्री नैन। इनकूं साधै साधनों पद पावै सुख चैन॥१६२॥ नीं-
द जैंभाई आलकस भूख प्यास जब होय। चरणदास पांचौं कही अ-
गनत तत्व सूं जोय॥१६३॥ रक्त पित्त कफ तीसरो बिंद पसीनो जान।
चरणदास परकीर्त्ति ये पानी सूं पहिचान॥१६४॥ चाम हाड़ नाड़ी क-
हूं रोम जाम और मास। पिरथी की परकीर्त्तिये अंत सबन को नास॥
१६५॥ बल करना अरु धावना परसारन संकोच। देह बढ़ै सो जा-
नियै बायु तत्व है शोच॥१६६॥ काम क्रोध मोह लोभ गर्व तत्व अका-
श को भोग। नभ की पांचों जानिये नित न्यारा तू योग॥१६७॥ पांच
पचीस सूं सकाही इनके सकल सुभाव। निरबिकार तू ब्रह्म है आ-
पा आपकूं पाव॥१६८॥ निराकार निरलिप्त तूं देही जान अकार।
आपन देही मान मत यही ज्ञान तत सार॥१६९॥ मस्तक छेदन कै

नहीं पावक सकै न जार। मरै मिटै सो तू नहीं गुरु गम भेद निहार ॥ १७० ॥ जलै कटै काया यही बनै मिटै फिर होय। जीव अविनाशी नित्य है जानै बिरला कोय ॥ १७१ ॥ आंख नाक जिह्वा कहूं त्वचा जान। अरु कान। पांचों इंद्री ज्ञान हैं जानै जान सुजान ॥ १७२ ॥ गुदा लिंग मुख तीसरो हाथ पाँव लख लेह ॥ पांचौं इंद्री कर्म हैं यह भी कहिये देह ॥ १७३ ॥ पृथ्वी काल मैं तौर है मुखै जानिये हार। पीरौ रंग पहिचानियो पीवन खान अहार ॥ १७३ ॥ पित्ते में पावक रहै नयन जानिये द्वार। लाल रंग है अग्नि को लोभ मोह आहार ॥ १७५ ॥ जल को बासा लहै लिंग जानिये द्वार। मैथुन कर्म अहार है धौलो रंग निहार ॥ १७६ ॥ पवन नाभ में रहत है नासा जानु जुहार। हर्यो रंग है वायु को गंध सुगंध अहार ॥ १७७ ॥ अकाश शीश में बास है स्रवन द्वारे जान। शब्द कुशब्द अहार है ताकूं श्याम पहिचान ॥ १७८ ॥ कारण सूक्ष्म लिंग है अरु कहियत अस्थूल। शरीर चार सों जानिये मै मेरी जड़ मूल ॥ १७९ ॥ चित्त बुद्धि मन अहंकार जो अंतस करन सुचार। ज्ञान अग्नि सों जारिये कर करमीत बिचार ॥ १८० ॥ शब्द स्परस और गंध है। अरु कहियत रस रूप। देह कारण तनमातरा तू कहियत निहरूप ॥ १८१ ॥ निराकार सो है अचल निरबासी तू जीव। निरालम्ब निरबैर सौं अज अबिनाशी जीव ॥ १८२ ॥ बौयें कोठा अग्नि को दहने जल परकास। मन हिरदय अस्थान है पवन नाभि में बास ॥ १८३ ॥ मूल कमल दल चार को लाल पंखुरी रंग। गौरी सुत बासा कियो छस्से जाप इकंग ॥ १८४ ॥ कंमल षट दल पियरे बरण नाभी तलै संभाल। षट सहस्र जाप जपले ब्रह्म साबित्री नाल ॥ १८५ ॥ दशाम। पंखुरी कमल है नील बरण सो नाम। बिष्णु लक्ष्मी बासा कियो षट सहस्र याम। १८६। अनहद चक्र हृदय रहै द्वादशा दल अरु श्वेत। षट सहस्र जाप जपिले सो। शिव सकल जहां देत। १८७ षोड़शा दल को

कमलहै कराठ बास शशिरूप। जापसहस्सरजहँजपैभेद लहै। अतिगूप॥१८८॥ अग्निचक्र दोदलकमलत्रिकुटीधामअनूप। जापसहस्सरजहंजपै पावैज्योतिस्वरूप॥१८९॥ दलहजारकी कमलीहै गगनमंडल नेवास। जापसहस्सरजहँजपै तेजपुंजपरकाश॥१९०॥ योगयुगतकरखोजले सुरत निरतकरचीन। दशप्रकारअनहदबजैहोय जहां लौलीन॥१९१॥ **कुंडलिया**॥ एकभँवर गुंजारसी द्वितिय शंखधुनिहोय। तीजेशब्द मृदंगका चौथेताल हैसोय॥ चौथेतालहै सोय पांचवें घंटाबाजै। छठेसु मुरली नाद। सातवें भेरजुगाजै॥ आठवेंबाजै दुंदुभी सिंह गर्जनानौलो। दशवें बाजै घूंघुरू चरणदाससुन लो॥१९२॥ **दोहा**॥ दशप्रकार अनहदधुरै जितयोगीहोय लीन। इंद्रीथकै मनवौथकै चरणदास कहदीन॥१९३॥ तीनपांचनौनाटिका दशबांईकूं जान। प्राण अपानसमानहै अरुकहियतउद्यान१९४ व्यानवायु अरु किरकरा कूरमबाँईजीत। नागधनंजय देवदत दशबांईरणजीत॥१९५॥ नवौ द्वारकूबंदकर उत्तम नाड़ीतीन। इड़ा पिंगला सुखमनाकेलकरैंपरबीन॥१९६॥ करते प्राणायामके तिरगयेपतितअनेक। अनहदधुनके बीचसें देखै शब्द अलेख॥१९७॥ पूरक कर कुम्भककरै रेचक पवनउतार। ऐसेप्राणायामकर सूक्षमकरै। अहार॥१९८॥ धरतीबंध लगायकर दशौवायुकूंरोक। मस्तक प्राणचढ़ायकर करैअमरपुरभोग॥१९९॥ पांचौं मुद्रा साधकै पावैघटकोभेद। नाड़ीशक्तचढ़ायकैषट चकरकूंछेद॥२००॥ योगयुगतिकै कीजियेकै अजपाको ध्यान। आपा आप विचारियेपरमतत्वकोज्ञान॥२०१॥ शूद्र वैश्य शरीरहै ब्राह्मण औरजपूत। बूढ़ाबालातू नहीं चरणदास अवधूत॥२०२॥ कामामायाजानिये जीवब्रह्महै मित्त। काया छूटे खातमिटै तू परमातम नित्त॥

२०३॥ पापपुराय आशा तजो मान और तोथाप। काया मोह बिकार
तजि जपै सु अजपा जाप॥ २०४॥ आप भुलानों आप में बंध्यो आप-
ही आप। जाकूं ढूंढ़त फिरत है सो तू आपी आप॥ २०५॥ इच्छा दुई बि-
सार करि क्यों न होय निर्बास। तू तो जीवन मुक्त है तजो मुक्ति की।
आस॥ २०६॥ पवन भई आकाश सूं अग्नि बायु सूं होय। पावक सूं
पानी भयो पानी धरती सोय॥ २०७॥ धरती मिठे स्वाद है खारी।
स्वाद सों नीर। अगिन चरपरो स्वाद है खट्टो स्वाद समीर॥ २०८॥
खट्टा सीठा चरपरा खारा परसन होय। जबहीं तत्व बिचारिये पांच त-
त्व में कोय॥ २०९॥ स्वाद नाप और रंग है और बताई चाल। पांच त-
त्व की परख यह साध पाव ततकाल॥ २१०॥ तिरकोनौ पावक च-
लै धरती तौ चौकोर। शून्य स्वभाव अकाश को पानी लंबो गोल॥
२११॥ अगन तत्व गुण तामसी कही रजोगुण बाय। पिरथी नीर स-
तोगुणी नभ है अस्थिर भाय॥ २१२॥ नीर चलै जब स्वास में रण।
ऊपर चढ़ि मीत। बैरी को शिर काट करि घर आवै रणजीत॥ २१३
पिरथी के परकाश में युद्ध करै जो कोइ। दोउ दल रहै बराबरी हारि।
बाँयें में होइ॥ २१४॥ अग्नि तत्व के बहत ही युद्ध कारन मत जाव।
हारि होय जीतै नहीं अरु आवै तन घाव॥ २१५॥ तत्व अकाश में
जो चलै तौ वाहीं रहि जाय। रण माहीं काया छुटै घर नहि देखै आय
॥ २१६॥ जल पिरथी के योग में गर्भ रहै सो पूत। बायु तत्व में छोकरी
आवर सूत कुसूत॥ २१७॥ पिरथी तत्व में गर्भ जो बालक होये भू-
प। धनवंत सोइ जानिये सुंदर होय स्वरूप॥ २१८॥ अगिन तत्व जब च-
लत है कभी गर्भ रह जाय। गर्भ गिरै माता दुखी हो माता मर जाय।
॥ २१९॥ बायु तत्व स्वर दाहिने करै पुरुष जब भोग। गर्भ रहै जो ता
समय देही आवे रोग॥ २२०॥ आसन संय्यम साध कर दृष्टि स्वा-
स के माहिं। तत्व भेद यों पाइये बिन साधे कछु नाहिं॥ २२१॥ आसन

पदम लगाय कै एक वर्ष नित साध। बैठे लेटे डोलते स्वासा ही आराध ॥२२२॥ नाभि नासिका माहिं कर सोहं सोहं जाप। सोई अजपा जाप है छुटै पुराय अरु पाप ॥२२३॥ भेद स्वरोदय बहुत है सूक्षम कह्यो बनाय। ताकूं समझ विचार ले अपनो चित मन लाय॥२२४॥ धरन टरै गिरवर टरै ध्रूव टरै सुन मीत। वचन स्वरोदय ना टरै मुरली सुत रनजीत ॥२२५॥ सुखदेव गुरु की दया सूं साध दया सूं जान। चरणदास रजनीत नै कह्यो स्वरोदय ज्ञान॥२२६॥ **छप्पय** ॥ डहरे में मेरो जनम नाम रणजीत बखानौ। मुरली को सुत जान जात दूसर पहिचानौ॥ बाल अवस्था माहिं बहुरि दिल्ली में आयो। रमत मिले सुखदेव नाव चरणदास धरायो ॥ योग युगत हरि भक्ति करि ब्रह्मज्ञान दृढ़ कर गह्यो। आतम तत्व बिचार कै अजपा मैं सन मन रह्यो ॥ २२७ ॥

सम्पूर्णम शुभमस्तु